ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 47 कुल पृष्ठ-8 2 से 8 अगस्त, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 सा.शु.-14

हरिद्वार में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर

मानव सेवा प्रतिष्ठान ने किया 40 विद्वानों, आचार्यों, भजनोपदेशकों तथा पत्रकारों का सम्मान

स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी तथा श्री रामपाल शास्त्री आदि ने शॉल, स्मृति चिन्ह, सम्मान पत्र एवं धनराशि प्रदान कर किया सम्मानित

सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाते हुए अपने 20 वर्ष पूर्ण करने के शुभ अवसर पर आर्य जगत में प्रथम बार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन दिनांक 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को मानव सेवा प्रतिष्ठान ने आर्य जगत् के 40 विद्वान्, विदुषी, आचार्य, आचार्याओं, पत्रकारों, भजनोपदेशकों एवं पुरोहितों को सम्मानित किया जिसमें उन्हें शॉल, स्मृति चिन्ह, सम्मान पत्र एवं धनराशि का चैक देकर उनकी समाज में दी गई सेवाओं के लिए संस्था ने उऋण होने का तुच्छ सा प्रयास किया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान हर वर्ष सैकड़ों छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करके उन्हें शिक्षित–दीक्षित होने में सहयोग करने के साथ–साथ अनेक विद्वानों का भी सम्मान हर वर्ष करके अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपने उद्देश्यों में संलग्न है। अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में संस्था को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सम्मान करने का यह सुअवसर प्रदान किया गया जिसको संस्था ने पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ सम्पन्न किया। इस अवसर पर कुछ व्यवधान भी प्रोटोकाल के कारण हुआ जिसके लिए हम सहयोगियों एवं विद्वानों से क्षमा चाहते हैं।

सम्मानित जन इस प्रकार हैं :– ब्र. सुनील शास्त्री, प्रबन्धक श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल, देवालय, गोमत अलीगढ़, उत्तर प्रदेश को 'श्रीरामपत आर्य इस्माईला रोहतक (हरि.) स्मृति सम्मान', श्री मनुदेव शास्त्री प्राध्यापक गुरुकुल आश्रम आमसेना (ओडिशा) को 'श्रीमती लज्जावंती देवी न्यू जर्सी (अमेरिका) स्मृति सम्मान', आचार्य विक्रमदेव जी नैष्ठिक, प्रबन्धक आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा) को 'श्रीरामपत आर्य इस्माईला रोहतक (हरि.) स्मृति सम्मान', श्री नागेन्द्र कुमार मिश्र, प्राचार्य श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या, फैजाबाद (उ. प्र.) को 'स्व. पं. बलदेव ऋषि तिवारी अमस्टरडैम (हालैण्ड) स्मृति सम्मान', आचार्य सत्यसिंधु आर्य, प्रधानाचार्य आर्ष गुरुकुल विद्यालय होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) को 'स्व. पं. बलदेव ऋषि तिवारी अमस्टरडैम (हालैण्ड) स्मृति सम्मान', आचार्या अनुपमा आर्या, प्राचार्या वैदिक कन्या गुरुकुल ट्रस्ट, फतुही, जिला–गंगानगर (राजस्थान) को 'स्व. श्रीमती शीलवती देवी, बल्लभगढ़, भरतपुर, राजस्थान स्मृति सम्मान', आचार्या मनु आर्या, आचार्या गार्गी कन्या गुरुकुल भैय्याचामड़, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश को 'स्व. श्रीमती शीलवती देवी, बल्लभगढ़, भरतपुर, राजस्थान स्मृति सम्मान', आचार्या ऋतम्भरा शास्त्री, उपाचार्या, आर्ष कन्या विद्यापीठ, गुरुकुल नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश को 'स्व. श्रीमती ईतवारिया रामदास तिवारी अमस्टरडैम (हालैण्ड) स्मृति सम्मान', वीरयज्ञ शास्त्री, प्रबन्धक, गुरुकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद, हरियाणा को 'स्व. श्रीमती ईतवारिया रामदास तिवारी अमस्टरडैम (हालैण्ड) स्मृति सम्मान', आचार्य सुधांशु, प्राचार्य श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, खेड़ा खुर्द, दिल्ली को 'मास्टर रत्नसिंह डवास, सुल्तानपुर (दिल्ली) स्मृति सम्मान', आचार्य विनय कुमार वैदिक, प्राचार्य, आदिम गुरुकुल आश्रम, कुनदुली, कोरापुट (ओडिशा) को ' स्व. मास्टर रत्नसिंह डवास, सुल्तानपुर (दिल्ली) स्मृति सम्मान', सोमवीर शास्त्री, प्रबन्धक, आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली को 'स्व. श्री देवपाल शास्त्री, मकड़ौली कलां, रोहतक, हरियाणा स्मृति सम्मान', कोमल कुमार आर्य, आचार्य आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम, कोसरंगी, महासमुन्द, छत्तीसगढ़ को 'स्व. श्री देवपाल शास्त्री, मकड़ौली कलां, रोहतक, हरियाणा स्मृति सम्मान', आचार्य दिनेश कुमार शास्त्री, प्रवक्ता, व्याकरण गुरुकुल पुष्पावती, पूठ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश को 'स्व. श्री शुभराम सहरावत, पालम, दिल्ली स्मृति सम्मान', स्वामी विश्वानन्द सरस्वती, प्राचार्य आर्ष गुरुकुल एवं गौशाला, दखौला, मथुरा, उत्तर प्रदेश को 'स्व. श्री शुभराम सहरावत, पालम, दिल्ली स्मृति सम्मान', आचार्य बृहस्पति, आचार्य गुरुकुल नव–प्रभात, वैदिक विद्यापीठ, नुआपाली, बरगढ़, उड़ीसा को 'स्व. श्री शुभराम सहरावत, पालम, दिल्ली स्मृति सम्मान', आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, सम्पादक 'अध्यात्म पथ' दिल्ली को 'स्व. श्री बिसन नारायण मुखी, कीर्तिनगर, दिल्ली स्मृति सम्मान', आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, प्रधान, पुरोहित सभा दिल्ली को 'स्व. श्री बिसन नारायण मुखी, कीर्तिनगर, दिल्ली स्मृति सम्मान', शिवदेव शास्त्री, अध्यापक आर्ष ज्योतिर्मठ, गुरुकुल पौंधा, देहरादून को 'स्व. श्रीमती मोहनदेवी मुखी, कीर्तिनगर, दिल्ली स्मृति सम्मान', श्रीमती सीमा आर्या, अधिष्ठात्री, आर्ष कन्या गुरुकुल वेदधाम, सोंरखा, नोएडा, उत्तर प्रदेश को 'स्व. श्रीमती मोहनदेवी मुखी, कीर्तिनगर, दिल्ली स्मृति सम्मान', सुश्री मधुलिका शास्त्री, आचार्या, श्रुतिधाम कन्या गुरुकुल भरताना, जीन्द, हरियाणा को 'परम साध्वी स्व. श्रीमती वेदकौर आर्या याकूबपुर, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', आचार्या सविता, प्राचार्या वैदिक कन्या गुरुकुल नवलपुर, बिजनौर, उत्तर प्रदेश को 'परम साध्वी स्व. श्रीमती वेदकौर आर्या याकूबपुर, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', सुश्री नितेश आर्या शास्त्री, उपाचार्या, श्रुतिधाम कन्या गुरुकुल भरताना, जीन्द, हरियाणा को 'परम साध्वी स्व. श्रीमती वेदकौर आर्या याकूबपुर, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', आचार्या शारदा, आचार्या, आर्ष कन्या गुरुकुल घुचापाली, बरगढ़, उड़ीसा को 'स्व. श्रीमती बरजी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री खूबराम, खानपुर कलां, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', डॉ. सुदर्शन देव आचार्य, संस्थापक–संचालक, गुरुकुल हरिपुर, नुवापाड़ा, उड़ीसा को 'स्व. श्रीमती बरजी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री खूबराम, खानपुर कलां, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', डॉ. जयेन्द्र कुमार, प्रबन्धक–आचार्य, आर्ष गुरुकुल सैक्टर–33, नोएडा, उत्तर प्रदेश को 'स्व. श्रीमती बरजी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री खूबराम, खानपुर कलां, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', आचार्य हरिनिवास शास्त्री, आचार्य, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, भादस, मेवात, हरियाणा को 'स्व. चौधरी राजेन्द्र देव सिंह आर्य, याकूबपुर, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', डॉ. अशोक कुमार आर्य, संचालक–सम्पादक, 'आर्यावर्त केसरी, अमरोहा, उत्तर प्रदेश को 'स्व. चौधरी राजेन्द्र देव सिंह आर्य, याकूबपुर, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', आचार्या विद्यावती, आचार्या कन्या गुरुकुल लोवाकलां, झज्जर, हरियाणा को 'श्रीमती मुखत्यारी देवी, बेरी, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', डॉ. रविन्द्र आर्य, संचालक, भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, जसात, गुरुग्राम, हरियाणा को 'श्रीमती मुखत्यारी देवी, बेरी, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', श्री हीरा प्रसाद शास्त्री, आचार्य पं. लेखराम आर्ष गुरुकुल पालक्काड़, वेल्लीनेझि (केरल) को 'श्रीमती मुखत्यारी देवी, बेरी, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान', श्रीमती मधुर लता मान, प्रिंसिपल, आर्ष कन्या गुरुकुल मोरमाजरा, करनाल, हरियाणा को 'स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी, नोंल्था, पानीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान', श्रीमती सुनीता आर्या, प्रिंसिपल, वैदिक कन्या गुरुकुल, ऐंचराकलां, जीन्द, हरियाणा को 'स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी, नोंल्था, पानीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान', चौ. धर्मवीर सिंह, प्रधान, आर्ष कन्या गुरुकुल पाढ़ा, करनाल, हरियाणा को 'स्व. चौधरी जयभगवान, जागलान, नोंल्था, पानीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान', पं. अशोक आचार्य, भजनोपदेशक–प्रचारक, ग्वालियर, मध्य प्रदेश को 'स्व. चौधरी जयभगवान, जागलान, नोंल्था, पानीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान', श्री राजेन्द्र सिंह आर्य, उपप्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, बागपत, उत्तर प्रदेश को 'श्रीमती होशियारी देवी, बड़ौत, बागपत, उत्तर प्रदेश स्मृति सम्मान', श्री राजेन्द्र सिंह आर्य प्रधान–संरक्षक, आर्य समाज रठौड़ा, बागपत, उत्तर प्रदेश को 'श्रीमती होशियारी देवी, बड़ौत, बागपत, उत्तर प्रदेश स्मृति सम्मान', आचार्य इन्द्रपाल जी, आचार्य एवं व्यवस्थाक, गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश को 'स्व. चौधरी फतेहसिंह, आंतिल कुमासपुर, सोनीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान', श्री सहदेव बेधड़क, आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक को 'स्व. चौधरी चन्दन सिंह सांगवान, ढराणा, झज्जर, हरियाणा स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। किन्हीं कारणों से सम्मान प्राप्त करने वाले कुछ विद्वान् समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

त्रिदिवसीय इस कार्यक्रम में मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव शास्त्री, श्री सोमदेव शास्त्री वरिष्ठ उपप्रधान, उपप्रधान हरवीर शास्त्री, संजय कुमार मंत्री, श्रीमती कमलेश उपमंत्री, श्रीमती ऊषा आर्या कोषाध्यक्ष, श्रीमती शीलादेवी सदस्या, बलजीत सिंह सदस्य, राजवीर सिंह शास्त्री सदस्य, श्री रामपाल शास्त्री कार्यकारी प्रधान आदि सभी अधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। संस्था के सहयोगी जनों में मा. रामकुमार जी गहलावत–सांपला, श्री ब्रह्मजीत सिंह रोहतक, डॉ. अजय कुमार शास्त्री जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, श्री विनोद मकड़ौली, श्री मनीष रोहतक, श्री धर्मपाल सहरावत पालम, श्रीमती सुनीता सांगवान नजबगढ़, श्रीमती कमलेश मकड़ौली कलां, रोहतक आदि अनेक जनों की उपस्थिति हमारे लिए उत्साहजनक रही।

– डॉ. कंवर सिंह शास्त्री,
महामंत्री मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली

- सम्बन्धित चित्र पृष्ठ 4 पर देखें

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

21वीं शती में अध्यापक और विद्यार्थी : दशा और दिशा

– डॉ. निर्मल कुमार कौशिक

शिक्षा और विद्या दोनों का अर्थ एक ही है सीखना अथवा जानना। इन दोनों का उद्देश्य है ज्ञान प्राप्त करना। ज्ञान की प्राप्ति मनुष्य केवल गुरु द्वारा ही कर सकता है। भारत में वैदिक काल से ही गुरु–शिष्य परम्परा का प्रचलन रहा है। हमारे मनीषियों ने मानव जीवन को चार भागों में विभक्त किया। ब्रह्मचर्य काल ही विद्यार्थीकाल अर्थात् विद्या प्राप्त करने का काल माना जाता था। महर्षि लोग नगरों से दूर प्रकृति के आंचल में आश्रमों अथवा गुरुकुलों की स्थापना कर बिना भेदभाव के शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते थे। इसके बदले में उनसे कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। राजा लोग आश्रमों को आर्थिक सहायता के रूप में दानादि दिया करते थे। शिष्य भी भिक्षा आदि ग्रहण कर गुरु की सेवा किया करते थे। गुरुकुल में विद्यार्थी वेद–वेदांग, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद, धनुर्विद्या आदि का ज्ञान प्राप्त करते थे। गुरु और गुरुपत्नी ही माता–पिता का दायित्व पूरा करते थे। मौर्यकाल से पूर्व भारत में तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, उद्दण्डपुर, संगम, वाराणसी आदि अनेक विश्वविद्यालय भी स्थापित हो चुके थे। आक्रमणकारियों ने भारतीय संस्कृति को तहत–नहस करने के लिए इन विश्वविद्यालयों को बहुत हानि पहुँचाई। पुस्तकालयों को जला दिया गया। मुगलकाल में मदरसों की स्थापना आरम्भ हुई। ब्रिटिश राज्य में तो शिक्षा का पूरा आधुनिकीकरण ही हो गया। अब गुरुकुलों की जगह विद्यालय और विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। गुरुकुल तो अब नाम मात्र के हैं। कुछ गुरुकुल भी विश्वविद्यालय का ही रूप धारण कर गए हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में चार प्रमुख बिन्दु हैं अध्यापक, छात्र, माता–पिता और समाज। इनमें अध्यापक और छात्र ही विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। अध्यापक और छात्र के सम्बन्धों का सामंजस्य ही शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति करता है। अध्यापक और छात्र के सम्बन्धों को आत्मभाव के स्तर पर आंकने की आवश्यकता है। प्राचीन गुरुकुल परम्परा में घर त्याग कर माता–पिता से अलग छात्र गुरुकुल में गुरु के सान्निध्य में ही रहता था। गुरु का आदेश और उपदेश उसके लिए ब्रह्मवाक्य होता था। गुरु ही शिष्य के व्यक्तित्व और चरित्र के निर्माण की भूमिका निभाता था।

कठोपनिषद् में गुरु और शिष्य अपने सम्बन्धों में स्नेहसूत्र में बंधे रहने के लिए ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करते हैं – हे परमात्मन्! आप हम गुरु शिष्य दोनों की साथ–साथ सब प्रकार से रक्षा करें। हम दोनों का आप साथ–साथ समुचित रूप से पालन–पोषण करें। हम दोनों साथ ही साथ सब प्रकार से बल प्राप्त करें। हम दोनों की अध्ययन की हुई विद्या तेजपूर्ण हो। कहीं किसी से हम विद्या में परास्त न हों और हम दोनों जीवन भर स्नेहसूत्र से बंधे रहें। हमारे अन्दर परस्पर कभी द्वेष न हो। तीनों तापों की निवृत्ति हो। भारत में गुरु–शिष्य परम्परा अत्यन्त समृद्ध और पुष्ट रही है। यहाँ तक कि गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और शिव का रूप ही दिया गया है। कबीर जी ने तो कहा है कि गुरु गोबिन्द दोउ खड़े काके लागू पाय। बलिहारी गुरु आपने जिन गोबिन्द दियो बताय। फरीद जी कहते हैं – 'धर्म के रास्ते पर चलो, सत्य बोलो, झूठ कभी न बोलो और गुरु के बताए मार्ग पर ही चलो।' भारत में गुरु का महत्त्व हर युग में रहा है। गुरु अपने शिष्यों के लिए जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। पंजाब का इतिहास इस बात का साक्षी है कि सिख गुरु परम्परा ने अपने शिष्यों को सुगम और सुखमय जीवन जीने का रास्ता दिखाया। आज विश्वभर में उनके शिष्य पूरे विश्व को गुरमति का सन्देश दे रहे हैं। अच्छे गुरु का शिष्य होना भी गर्व और गौरव की बात है।

आज गुरु और शिष्य नए रूपों में अध्यापक और विद्यार्थी कहे जाने लगे हैं। उनके सम्बन्धों में और शिक्षा के प्रारूप में भी पर्याप्त परिवर्तन आ गया है। साधनों और माध्यमों के प्रारूप भी बदल रहे हैं। मानवीय मूल्यों और सामाजिक सरोकारों के अवमूल्यन के कारण शिक्षक और विद्यार्थी के सम्बन्ध भी औपचारिक हो गए हैं। विद्यार्थी सोचता है कि मैं फीस देकर पढ़ता हूँ और अध्यापक को पढ़ाने का वेतन मिलता है। अध्यापक और विद्यार्थी का सम्बन्ध केवल कक्षा तक ही सिमट कर रह गया है। बच्चे के शिक्षा स्तर और उसके शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता और उसकी कठिनाईयों के पीछे उसके व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि की बहुत बड़ी भूमिका होती है। बच्चे की बौद्धिक क्षमता उसकी शारीरिक क्षमता को जाने बिना आप विद्यार्थी की सीखने की प्रक्रिया को नहीं जान सकते। अतः अध्यापक को विद्यार्थी के व्यक्तित्व को जानने के लिए उसके सम्पर्क में रहना जरूरी है। अब रही–सही कसर को पूरा करते हुए नई तकनीक इण्टरनैट, आनलाईन और पत्राचार व दूरस्थ शिक्षा–पद्धति ने अध्यापक और विद्यार्थी का सम्बन्ध ही विच्छेद कर दिया है। 21वीं सदी जिसे हम डिजीटल की सदी कहते हैं उसने हमारे युवा वर्ग को दिशाविहीन और अस्तित्वहीन कर दिया है। शिक्षा मनुष्य को जीवन का मार्ग प्रशस्त करने की कला सिखाती है। मगर शिक्षा देने वाले और लेने वाले का सम्बन्ध ही सुखद नहीं है तो शिक्षा कैसी होगी? छात्र जीवन में अध्यापकों के नियमों का पालन करके ही विद्यार्थी अनुशासन में रहना सीखता है। छात्र जीवन ही भावी जीवन की नींव होती है। छात्रावस्था में ही विद्यार्थी चरित्रवान, विद्वान्, राष्ट्रभक्त और अच्छा नागरिक बन सकता है। अगर हम आज 21वीं सदी की शिक्षा की बात करें तो शिक्षण संस्थाएँ राजनीति के अखाड़े बन गए हैं। परिणामतः युवावर्ग स्वयं को विद्यार्थी कम और नेता अधिक मानने लगे हैं।

विद्यार्थी अपने अध्यापकों के आदर्शों को अपना कर स्वयं को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करते हैं। मगर अध्यापक ही दुर्व्यसनों का शिकार हो जाए और उसका चारित्रिक पतन हो जाए तो वैसा ही प्रभाव विद्यार्थियों पर भी पड़ेगा। अध्यापक को तो बुद्धिमान्, विद्वान्, त्याग की मूर्ति सहनशीलता की मूर्ति कहा जाता है मगर आज का अध्यापक विद्यार्थियों के साथ मित्रता का सम्बन्ध रखता है। जिससे विद्यार्थी उसका सम्मान नहीं करते हैं। बच्चे भी अनुशासनहीन और उद्दण्ड हो जाते हैं।

विद्यार्थियों में असंतोष की भावना के कारण भी अध्यापकों और छात्रों के सम्बन्धों को ठेस लगी है। शिक्षा प्राप्त कर बेरोजगारी की पंक्ति को बढ़ाना शिक्षक और शिक्षा से मोहभंग करता है। शिक्षा निरर्थक है इसे व्यवसाय से जोड़ना चाहिए। शिक्षा का वास्तविक अर्थ और प्रयोजन व्यक्ति को व्यावहारिक बनाना है न कि शिक्षित होने के नाम पर अहं और गर्व पैदा करना। हमारे देश में आजकल जो शिक्षा प्रदान की जा रही है वह अध्यापक और छात्र की दूरी को बढ़ा रही है विदेशी परम्पराओं और तकनीकों को लागू करने से पूर्व देखना चाहिए था कि हमारी आवश्यकताएँ और सीमाएँ क्या हैं? हमें किस प्रकार की शिक्षा की जरूरत है। शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए? हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति को भी ध्यान में रखना चाहिए। अगर गुरु–शिष्य के सम्बन्ध ही समाप्त हो गए तो शिक्षा का अर्थ ही क्या रह जायेगा। जीवनमूल्यों की रक्षा और संस्कृति की सुरक्षा का दायित्व कौन सम्भालेगा? यही 21वीं सदी के अध्यापक और विद्यार्थी की दशा पर विचार करने और दिशा पर चिन्तन करने का समय है।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अगर हम देखें तो शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का ही सम्बन्ध शिक्षा से है। समाज और शिक्षा एक–दूसरे पर आश्रित हैं। जिस समाज में जैसे आदर्श और मूल्य होंगे शिक्षा भी उन्हीं आदर्शों और मूल्यों के अनुरूप होगी। अध्यापक उन्हीं मानकों पर अपनी शिक्षा प्रदान करेगा और विद्यार्थी उन्हीं सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं का अनुसरण करेगा। अगर समाज के मानक या मूल्य किसी कारण से बदल जाते हैं तो शिक्षा के आदर्श भी उसी के अनुरूप बदलते जायेंगे। भारत इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। प्राचीन शिक्षापद्धति और आदर्श आज के संदर्भ में अत्यन्त भिन्न थे। ब्रिटिश शिक्षानीति के कारण भारतीय शिक्षा का प्रचार–प्रसार इतनी तेजी से बढ़ा कि आज हम पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के मूल्यों के प्रभाव में अपने आदर्शों और शिक्षा के प्रयोजनों को पीछे छोड़ आये हैं। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही इससे प्रभावित हुए हैं। शिक्षा पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव होने के सम्बन्धों पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कम्प्यूटर और अन्तर्जाल ने शिक्षक के महत्त्व को कम किया है। गूगल, याहू ही सबका शिक्षक और ज्ञान का भण्डार बन गया है। विज्ञान कितनी भी उन्नति कर ले मगर शिक्षक का महत्त्व जो विद्यार्थियों के लिए है उसका स्थान कोई नहीं ले सकता। कम्प्यूटर सिखाने के लिए भी तो शिक्षक की आवश्यकता होती ही है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में परिवेश कुछ भिन्न है। वहाँ केवल शिक्षा के नाम पर औपचारिकताएँ निभाई जाती हैं। डिग्रियाँ बाँटी जाती हैं। शिक्षा के नाम पर लाखों रुपये फीस ली जाती है। मगर ज्ञान–शून्य शिक्षा लेकर विद्यार्थी बेरोजगारी की पंक्ति में खड़े हो जाते हैं। कारण शिक्षक और विद्यार्थी के सम्बन्धों की दूरी और आत्मीयता का अभाव। जैसी शिक्षा होगी वैसा समाज होगा। समाज में अराजकता, असन्तोष, लूटपाट, विध्वंस, हड़तालें, धरने, बन्द आन्दोलन आदि होंगे। अध्यापक और छात्र किसी न किसी बात पर आन्दोलन कर रहे होते हैं। विश्वविद्यालयों में दंगे फसाद हो रहे हैं।

21वीं सदी के संदर्भ में शिक्षा के क्षेत्र में मानव मूल्यों और मानवादर्शों की बात कम ही की जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार अनुच्छेद–8.4 में शिक्षा को सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए एक सशक्त साधन बनाने के लिए कहा गया है। नीति की योजना में धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक, नैतिक, मूल्यों, समाज, सेवा, श्रम के प्रति आदर, छोटे परिवार में आस्था, वातावरण संरक्षण, संस्कृति बोध तथा राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों और आचरण और व्यवहार चरित्र निर्माण में सहायक मूल्य हैं। इसी से सामाजिक मूल्यों और राष्ट्रीय मूल्यों की नींव पुष्ट होती है। वैक्तिक मूल्यों के साथ–साथ सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों को अर्जित करने में अध्यापकों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। सामाजिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न वस्तुओं तथा परिस्थितियों के सम्बन्ध में विभिन्न मूल्यों को अध्यापक ही विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। समाज में सम्पर्क होने पर व्यक्ति अनेक जीवनमूल्यों को अर्जित करता है। इसमें भी शिक्षक द्वारा बताए गए मूल्यों और आदर्शों की सहायता से वह जीवन मूल्यों को धारण करता है। उसे अच्छे–बुरे का अन्तर करना आता है। हानि–लाभ का अन्तर करना आता है और वह एक आदर्शपुरुष और श्रेष्ठ नागरिक बन जाता है। इन सबके बावजूद शिक्षक और विद्यार्थी की दूरी इन मूल्यों का विघटन कर देती है। विद्यार्थी नकारात्मक सोच का शिकार हो जाता है और समाज में अपराधबोध की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। शिक्षक ही विद्यार्थी को उचित अनुचित का मार्ग बताता है। कई बार माता–पिता भी लाचार होकर अध्यापक के पास ही आते हैं कि बच्चा हमारा कहना नहीं मानता है आप ही इसे समझाइए। अध्यापक अपने अनुभव, प्रभाव और व्यवहार से बच्चे का मार्गदर्शन करता है। हम सब पर अपने शिक्षकों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। हाँ यह बात अलग है कि आप किस परिवार, विद्यालय अथवा समाज के परिवेश से सम्बन्ध रखते हैं। कोई भी इन्सान अपने जीवन में उस शिक्षक को कभी नहीं भूलता जिसने बच्चों को अपने जीवन में एक अच्छा इन्सान बनने की प्रेरणा दी हो। एक अच्छा शिक्षक ही विद्यार्थी को अच्छी और मूल्यवान शिक्षा प्रदान कर सकता है। जो अध्यापक स्वयं अपना उत्तरदायित्व न समझता हो, केवल स्वार्थ के लिए ही शिक्षक बना हुआ है वह शिष्यों को क्या शिक्षा दे सकता है। संत कबीर इसी ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि –

जा का गुरु भी अंधला, चेला खरा निरन्ध।
अन्धे–अन्धे ठेलया, दोनों कूप पड़न्त।।

आज के युग में जैसा अधकचरा ज्ञान हम विद्यार्थियों को परोस रहे हैं उससे कैसे शिक्षक पैदा होंगे यह हम सब जानते हैं। मैं सभी शिक्षकों की बात नहीं करता। कुछ मजबूरी में रोजगार प्राप्त करने के लिए ही शिक्षक बन जाते हैं। कुछ की रुचि नहीं होती। अध्यापक समर्पण, सद्भावना और त्याग का दूसरा नाम है। दूसरी बात उसे अपने विषय में पारंगत होना चाहिए। वह अपने क्षेत्र में ज्ञान का भंडार हो। कोई दूसरे को तभी दे सकता है अगर उसके पास देने को कुछ हो।

आज 21वीं सदी के दौर में जहाँ भारत विश्व के अग्रणी देशों में खड़ा है वहाँ शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पीछे है। अपनी गौरवान्वित संस्कृति और शिक्षापद्धति को त्याग कर हमने पश्चिमी संस्कृति के अनुसरण पर नई शिक्षण पद्धति को अपना तो लिया है मगर खोया बहुत कुछ है। शिक्षणनीति अभी तक प्रयोगावस्था में है – पाठ्यक्रम स्थिर नहीं है। योग्य शिक्षकों का अभाव है। शिक्षण–प्रणाली, परीक्षा प्रणाली, पाठ्यक्रम सभी में कुछ न कुछ त्रुटियाँ हैं। यह शिक्षा हमारे परिवेश के अनुरूप नहीं बन पाई है। अध्यापक और छात्र दोनों ही इस शिक्षा व्यवस्था से परेशान हैं, शिक्षा दिशाहीन है और शिक्षक ज्ञानहीन है। आधुनिकीकरण के नाम पर हमने बहुत कुछ खोया है। राष्ट्रीय शिक्षा आयोगों के संगठनों राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों, कोठारी कमीशन जैसी सुधारवादी संस्थानों ने भी अनेक सुझाव देकर भारतीय शिक्षा में सुधार लाने के अनेक प्रयास किए मगर छात्र–अध्यापक सम्बन्धों के सुधार पर कभी कोई सुझाव नहीं दिया। इसी से छात्र और अध्यापक इस दशा पर पहुँच गए हैं कि शिक्षा की इस दुरावस्था पर एक–दूसरे पर दोष लगा रहे हैं। अध्यापक कहता है बच्चे पढ़ते नहीं हैं। इस परिवेश में छात्र अधिक निराश और हताश हैं। लाखों–करोड़ों खर्च करने पर भी विद्यार्थी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाता है। अध्यापक और छात्र की दूरी निरन्तर बढ़ती जा रही है। सरकार इस दिशा में कुछ करे साथ ही नित्यप्रति शिक्षा में जो कमियाँ उजागर हो रही हैं उन्हें दूर करने का उपाय सोचे। आज नकल का एक ऐसा दौर चल रहा है जो जलती अग्नि में घी का काम कर रहा है, जिसने शिक्षा के क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया है। इसको सुधारने वाले भी तो उन्हीं में से हैं। वे भी तो आधुनिक शिक्षा से ही शिक्षित हुए हैं। समय आ गया है कि सरकार इसकी ओर ध्यान दे। सरकार भी क्या करें उन्हें भी अन्य काम करने हैं। इस दिशा में अध्यापक अपना दायित्व सम्भाले और छात्र के भविष्य की चिन्ता करें। अपने ज्ञान के प्रकाश से उसका भविष्य भी उज्ज्वल करें, जो शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य भी है और जीवन का लक्ष्य भी। प्राचीन शिक्षा का सार था। मुझे अन्धकार से उजाले की ओर, असत्य से सत्य की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

– 163, आदर्शनगर, फरीदकोट, मो.:–9915702843

शिक्षा के क्षेत्र में चार प्रमुख बिन्दु हैं अध्यापक, छात्र, माता–पिता और समाज। इनमें अध्यापक और छात्र ही विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। अध्यापक और छात्र के सम्बन्धों का सामंजस्य ही शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति करता है। अध्यापक और छात्र के सम्बन्धों को आत्मभाव के स्तर पर आंकने की आवश्यकता है। प्राचीन गुरुकुल परम्परा में घर त्याग कर माता–पिता से अलग छात्र गुरुकुल में गुरु के सान्निध्य में ही रहता था। गुरु का आदेश और उपदेश उसके लिए ब्रह्मवाक्य होता था। गुरु ही शिष्य के व्यक्तित्व और चरित्र के निर्माण की भूमिका निभाता था।

तीन देवियों की घर–घर में पूजा करो

– स्व. पं. शिव कुमार शास्त्री, भूतपूर्व सांसद

इळा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः।।

अन्वय :– इडा सरस्वती मही अस्त्रिधः मयोभुवः देवीः तिस्त्रः बर्हिः सीदन्तु।।

मन्त्र में तीन देवियों की गुणवली का वर्णन करते हुए परामर्श दिया गया है कि ये घर–घर को प्रकाशित करें।

दुर्भाग्य से हमारे देश में इन तीनों देवियों का अनादर है। हमारी लम्बी दासता का सबसे भयंकर दुष्परिणाम यह हुआ है कि हम मातृ–संस्कृति, मातृभाषा और मातृभूमि के लिए जो आदर और श्रद्धा होनी चाहिए, उससे शून्य हो गए। यूँ तो मुसलमानों के भी छह–सात सौ वर्षों के शासन का भी दुष्प्रभाव हुआ, किन्तु इतना भयंकर नहीं जितना कि अंग्रेजों के ढाई सौ वर्षों का हुआ, क्योंकि मुसलमानों का शासन उग्रता और क्रूरतापूर्ण था, अतः प्रतिक्रिया के रूप में हिन्दुओं की भावना में दृढ़ता रही। मुसलमान शासकों ने विश्वविद्यालय ध्वस्त कर दिये, बड़े–बड़े पुस्तकालयों को आग लगा दी, किन्तु इन अत्याचारों से हिन्दुओं का मनोबल गिरा नहीं। उनमें यहाँ तक दृढ़ता आई कि मेधावी ब्राह्मणों ने वेदों और शास्त्रों को कण्ठाग्र करके रक्षा की। वेद की अनेक शाखाओं को स्मरण करके उनका पठन–पाठन ही जीवन का ध्येय बना लिया उस भयंकर विक्षोभ के समय में। मस्तिष्क संतुलित रखकर संस्कृति को सुरक्षित रखना असाधारण बात है। यद्यपि लम्बे समय तक होने वाले उन अत्याचारों से अनेक प्रकार की हानियाँ हुईं, किन्तु इतनी नहीं जितनी कि अंग्रेज के ढाई सौ वर्ष के शासन में। अंग्रेज के शासन ने भारत के सांस्कृतिक उपवन को जिस प्रकार उजाड़ा है, उसे तो समझने और अनुभव करने वाले अभी तक भी बहुत कम हैं।

मुसलमानों के और अंग्रेजों के शासन के परिणाम को एक नीतिकार के श्लोक से समझिये–

वने प्रज्वलितो वह्निर्दहन् मूलानि रक्षति।
समूलोन्मूलनं कुर्याद् वायुर्यो मृदुशीतलः।।

'जंगल में भड़की हुई दावानल हरे–भरे जंगलों को भस्म कर डालती है। यह इतनी उग्र होती है कि मानवीय प्रयत्नों से आसानी से इसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता। यह तो दो ही अवस्था में बुझती है– या तो जंगल में जलाने को तिनका तक न बचे तब समाप्त होती है, अथवा प्रभु–कृपा से घटाएँ उठकर लगातार वर्षा की झड़ी लगा दें तब यह आग ठण्डी हो पाती है। यह भयंकर अग्नि ऊपर–ऊपर से तो वृक्षों के तनों को भस्म कर देती है, किन्तु भूमि में छिपी हुई उनकी जड़ें सुरक्षित बच जाती हैं और वर्षा ऋतु के आने पर भूमि के सिंचित होते ही उन जड़ों में अंकुर निकलकर कालान्तर में फिर उसी प्रकार के हरे–भरे जंगल खड़े हो जाते हैं। किन्तु वायु, जो अनुभव करने में बड़ी कोमल और ठण्डी लगती है, वह आँधी का रूप धारण करके जब वृक्षों को उखाड़ती है तो वह भूमि में उनकी जड़ों को भी नहीं छोड़ती।'

अंग्रेजों का शासन वैदिक संस्कृतिरूपी उपवन के लिए आँधी के समान ही था, जिसने हृदय और मस्तिष्क की भूमि में से श्रद्धा और आस्था की जड़ों को उखाड़के फेंक दिया।

यह सब विनाश अंग्रेजी शिक्षा के कारण हुआ। जिन् दिनों हब्शियों को पकड़कर गुलाम बनाने के लिए अमरीका की मण्डियों में बेचा जाता था और उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार होते थे, उस समय इस कुत्सित प्रथा को समाप्त करने के लिए एक 'मिस स्टो' नाम की देवी ने बड़ा आंदोलन किया। वह इसके लिए जेल भी गई। इस विचारशीला कुमारी स्टो ने 'अंकल टोम्स कैबिन' नाम की पुस्तक लिखकर इन हब्शी दासों पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन किया। इस पुस्तक के प्रारंभ में स्टो ने कुछ महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं। वह लिखती है कि– ''यदि कोई देश दुर्भाग्य से पराधीन हो जावे तो उस देश के लोगों की मनोवृत्ति में हीनता आ जाती है। वे अपने–आपको तुच्छ और शासक–जाति के लोगों को महान् समझने लगते हैं, उनके खान–पान और रहन–सहन का अनुकरण करने लग जाते हैं और दुर्भाग्य से यदि शासक–जाति अपने शासितों में अपनी शिक्षा का प्रबन्ध कर दे तो फिर दासता की जड़ें उनके हृदय और मस्तिष्क में इतनी गहरी चली जाती हैं कि उन्हें उखाडना अत्यन्त कठिन होता है।''

स्टो के इस लेख की सच्चाई को हम अपनी आँखों से भारत में देख सकते हैं। जहाँ–जहाँ अंग्रेजी की शिक्षा पहुँचती जाती है, वहीं–वहीं पाश्चात्य वेशभूषा और खान–पान भी बदलता जाता है, और आश्चर्य है कि स्वाधीनता के बाद इन वर्षों में जितना अंग्रेजी का चलन बढ़ा है, वह अंग्रेजों के पौने दो सौ वर्षों के शासन में भी नहीं हुआ था। स्थान–स्थान पर अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल खुल रहे हैं। प्रत्येक अपने बच्चे को उन स्कूलों में पढ़ाने को लालायित है यदि आर्थिक विवशता से ही न पढ़ा सके तो दूसरी बात है। पैंट का दखल देहात तक पर हो गया है। सब अपने–अपने पारम्परीण रहन–सहन को भूल रहे हैं। पहले देखते ही कपड़ों के पहनावे से पंजाबी, उत्तर प्रदेशीय, बंगाली, मद्रासी और आंध्रीय पहचाना जाता था। अब पंजाबियों की पगड़ी छूटी, यूपी वालों की टोपी और धोती गई, बंगालियों का कुर्ता और घूमदार धोती, मद्रासियों की लुंगी, सब समाप्त होकर पैंट और कमीज छा गए हैं। अतः वेद के इस मंत्र में उद्बोधन किया गया है कि अपनी संस्कृति, भाषा और मातृभूमि की महत्ता को समझो और उसका आदर करो।

सर्वप्रथम इस मंत्र में 'इडा'– संस्कृति की बात कही है। हमारे देश में प्रचलित और पल्लवित संस्कृति 'वैदिक संस्कृति' है। आजकल लोग इसे भारतीय संस्कृति कहने लग गए हैं, किन्तु यह उनकी भूल है। भारतीय संस्कृति नाम की कोई संस्कृति है ही नहीं। भारत में तो आस्तिक, नास्तिक, मुर्दे जलाने वाले, दबाने वाले, बौद्ध, पारसी, सिख, ईसाई और मुसलमान सभी हैं। सबके विचार और आचार भिन्न–भिन्न हैं, अतः भारतीय संस्कृति कोई नहीं है। हमारी संस्कृति का वास्तविक और शुद्ध नाम वैदिक संस्कृति है। वेद के शब्दों में यह प्रथमा संस्कृति है और विश्ववारा, विश्व से स्वीकार करने योग्य और विश्व को सुख और शांति देने वाली है। वेद ने मानव को, समस्त संसार को परिवार समझकर आत्मीयता और स्नेह से परस्पर व्यवहार करने का परामर्श दिया है। वेद कहता है तुम सबमें कोई छोटा–बड़ा नहीं है, तुम सब मिलकर चलो, सब मिलकर विचार–विनिमय करो, तुम सब के विचारों में तथा खाने–पीने में समानता हो, मैं तुम सबको समान उत्तरदायित्व के जुए में जोड़ता हूँ, प्राणिमात्र में तुम्हारे जैसा ही आत्मा है, सभी को दुःख–सुख की समान अनुभूति होती है, अतः अपने स्वार्थ के लिए किसी को हानि न पहुँचाओ।

वेद के इन उच्च आदर्शों को जिसने भी पढ़ा, वह मुग्ध हो गया और मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करने को बाध्य हो गया। प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान् लुई जैकोलियट अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''बाइबिल इन इण्डिया'' में लिखता है–

"India is the world's cradle, thence it is that the common mother in sending forth her children even to the utmost west, has unjading testimony of our origin bequeathed us the legacy of her language, her laws, her morals, her literature and her religion. Traversing Persia, Arabia, Egypt and even forcing their way to the cold and cloudy north far from the sunny soil of their birth in vain they may forget their point of departure, their skin may remain brown or become white from contact with snows of the west, of the civilizations founded by them, splended Kingdoms may fall, and leave no trace behind but some few ruins of sculptured colums, new people may rise from the ashes of the old, but time and ruin united fail to obliterate the even legible stamp of origin."

''भारतवर्ष संसार का पालना है। वहीं से सबकी माता ने अपने बच्चों को दूर–से–दूर पश्चिम भेजा है और अपना उद्भव याद दिलाने के लिए अपनी भाषा, राजनियम, आचार, साहित्य और धर्म का दायभाग दिया है– वे फारस, अरब और मिस्र में घूम जावें, उनसे भी आगे अपनी सुखदा मातृभूमि से दूर सर्द और धुँधले उत्तर में पहुँच जावें, वे अपने निकास को भुलाने का व्यर्थ यत्न करें या उनकी चमडियाँ गंदुमी रहें या बर्फ के सम्पर्क से सफेद हो जावें, उन द्वारा स्थापित की हुई सभ्यताओं में से बड़े राज्यों का नाश हो जाए और पीछे थोड़े–से टूटे–फूटे विचित्र खम्भों के अतिरिक्त और कुछ शेष न छोड़ जाएँ, पुरानी नगरियों के खण्डहरों पर नयी नगरियाँ बस जावें, किन्तु समय और नाश मिलकर भी उन पर से उत्पत्ति स्थान के स्पष्ट ठप्पे को नहीं मिटा सकते।''

आगे जैकोलियट मनुस्मृति की प्राचीनता और उसकी सृष्टि–उत्पत्ति की वैज्ञानिकता की प्रशंसा करते हैं। मनुवर्णित सामाजिक नियमों की उपादेयता को भी अंगीकार करते हैं। जैकोलियट का एक और महत्वपूर्ण उद्धरण भी यहाँ उद्धृत करना उचित प्रतीत होता है–

We shall presently see Egypt, Judea, Greece, Rome all antiquity, in fact, copies Brahminical society in its castes, its theories, its religious opinion and adopts its Brahmins, its priests, its levities as they had aleady adopted the language. Legislation and philosophy of the ancient Vedic society whence their ancestors had deposted through the world to dessiminate the grand ideas of primitive revelation.

'हम देखेंगे' कि मिस्र, जूडिया, यूनान, रोम सर्वप्राचीन देश अपने जाति–भेद, अपनी कल्पनाओं, अपने धार्मिक विचारों में ब्राह्मण समाज का ही अनुकरण करते हैं और इसके ब्राह्मणों, इसके पुरोहितों, इसके याज्ञिकों को स्वीकार करते हैं जिस प्रकार कि पहले से ही उस प्राचीन वैदिक समाज से उनके पुरुष (पुरखे) सारे भूगोल में प्रारंभिक ईश्वरीय ज्ञान के उच्च समाज की भाषा, धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र को अंगीकार किया था, जिस समाज से उनके पुरुष (पुरखे) सारे भूगोल में प्रारंभिक ईश्वरीय ज्ञान के उच्च वैदिक विचारों को फैलाने के लिए निकले थे।'

इनसे हमारे अंग्रेजी पढ़े–लिखों की वैदिक संस्कृति के प्रति जो हीनभावना है, वह दूर हो जानी चाहिए और उचित रूप से गौरव की अनुभूति होनी चाहिए।

अन्त में डॉ. वालेस, जो विकासवाद के ही आविष्कारकों में से एक हैं, वेद के प्रति उनके विचारों की झाँकी और देखिये–

We must admit that the mind which oonceived and expressed appropriate language, such ideas as are everywhere apparent in these vedic hymns could not have been in any way inferior to those of the best of our teachers and poets, our Miltons and our Tenneysons.

(Social Environment and moral progress)—By Dr. Wallace, p. 143

'जो विचार वेद की ऋचाओं से प्रकट होते हैं, उनके लेखक उत्तम–से–उत्तम शिक्षकों और हमारे मिल्टनों तथा टेनीसनों से न्यून नहीं थे।'

अतः हमें अपनी संस्कृति देवी की पूजा करनी चाहिए। किसी संस्कृत के कवि ने वैदिक संस्कृति के बहुत हृदयकारी गुणों का वर्णन किया है कि वैदिक संस्कृति क्या है–

या जाता तुहिनाचलस्य शिखरे तप्तात्मनां शान्तये,
या लक्ष्मी मदनाशिनी क्षितिभुजां या ब्रह्मतेजोमयी।
या प्रेम्णा वसुधातले सुरपुरादुत्कर्षमातन्वती,
त्रैलोक्ये महिमानमञ्चतु नवं सा संस्कृतिर 'वैदिकी'

'जिस संस्कृति का जन्म त्रिविष्टप् में ऋषियों के हृदय में त्रिविध तापों को शांत करने के लिए हुआ, जिस संस्कृति की पावन विचारधारा से राजाओं का धन का मद समाप्त हो जाता है, जिस संस्कृति में ब्राह्मतेज का वर्चस्व सुशोभित रहता है, जो स्नेहिल विचारधारा से संसार को स्वर्ग से भी सुंदर बनाती है, वह वैदिक संस्कृति समस्त संसार में अपने अनूठे प्रभाव से सुशोभित रहे।'

यह हुई मंत्र में वर्णित इडा देवी की बात।

इसके बाद दूसरी देवी है 'सरस्वती'– मातृभाषा। इसका भी हमारे देश में पूजा तो क्या, अनादर ही हो रहा है। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार करके भी अभी अंग्रेजी का मोह हमसे नहीं छूटता। इस मूखर्ता के कारण अनेक बार विदेशों में हमारे राजनयिकों को अपमानित भी होना पड़ा है। रूस में विजयलक्ष्मी राजदूत बनकर गईं तो उनके सब परिचय–पत्र अंग्रेजी में थे। रूस में उन्हें अस्वीकार करते हुए कहा कि या तो ये पत्र भारत की भाषा में होने चाहिएँ अथवा रूस की भाषा में। किसी अन्य देश की भाषा में ये स्वीकार नहीं किये जा सकते। अपनी लोकसभा और राज्यसभा का दृश्य देखिये, यह प्रतीत ही नहीं होता कि हम भारत में हैं। बड़े 'कहलाने वाले घरानों का दृश्य देखिये, दुधमुँहे बालक होश संभालते ही अंग्रेजी बोलते हैं। हम जिस अंग्रेजी बोलने पर और अंग्रेजी रहन–सहन पर गर्व करते हैं, वहाँ दूसरे देशवासी हमें देखकर क्या सोचते हैं, यह एक अमेरिकन पत्रकार हैनरी सैंडर ने चित्रित किया है जो भारत के 34 वर्ष के स्वाधीन देश को देखने के लिए आया और यहाँ से जाकर जिसने भारत के विषय में अमेरिका के पत्र 'प्रोग्रेसिव' में लेख लिखा। उस लेख का अपेक्षित भाग निम्न है–

''अंग्रेजों के चले जाने के बाद पिछले 30 वर्षों में झण्डे के सिवाय भारत में और कुछ परिवर्तन नहीं आया है। भारतीय एक–दूसरे से जिस प्रकार के व्यवहार करते हैं, उसमें भी उनके औपनिवेशिक मस्तिष्क की झलक मिलती है। जब वे किसी भारतीय से ही बात करते हैं, तो धीरे–धीरे उनका वार्तालाप अंग्रेजी में बदल जाता है। शायद भारतीय यह भूलना ही नहीं चाहते कि उन्हें उनके अंग्रेज शासकों ने लिखाया–पढ़ाया है। एक भारतीय व्यवहार और आचरण में अपने को यूरोपीय से घटकर ही मानता है। जब वह किसी भारतीय के साथ बात करे या रहे, अपने को योरोपीय का नौकर–सा मानता है। जब मैं भारत पहुँचा तो मैंने बराबर हिन्दी में बात करने की कोशिश की, लेकिन मुझे लगा कि यह सब व्यर्थ है, बल्कि भारतीय हिन्दी में बात करना अपना अपमान समझते हैं।'' यह है प्रतिक्रिया एक विदेशी पर्यटक की।

हमें तीव्र आंदोलन करके इस मनोवृत्ति को परिवर्तित करना चाहिए और उत्तर भारत में बलपूर्वक अंग्रेजी का विरोध करना चाहिए। राजनैतिक कारणों से तमिलनाडु, बंगाल आदि प्रदेश हिन्दी का विरोध करते हैं, उन्हें उनके मार्ग पर चलने देना चाहिए। वे अंग्रेजी अपने प्रदेश में चलाना चाहें तो चलावें, किन्तु हिन्दी भाषी प्रदेश में सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रचलन कठोरता से रोकना चाहिए। कुछ समय में ही हमारी इस क्रियाशीलता से उनकी मनोवृत्ति बदलेगी और हिन्दी के प्रति सहनशीलता उत्पन्न होगी। हिन्दीभाषी प्रदेश में पत्रों के पते देवनागरी में ही लिखने चाहिए।

इस प्रकार हमारी मातृभाषा देवी हमारे घरों में प्रतिष्ठित होगी और उसकी पूजा होगी।

मंत्र में तीसरी देवी 'मातृभूमि' की पूजा कही। इसके लिए भी भारत में बहुत करना शेष है। यदि मातृभूमि की स्वाधीनता की रक्षा और समृद्धि का विचार भारतीयों में दृढ़ हो जावे तो इससे हमारे चिंतन और व्यवहार दोनों ही बदल जावेंगे। फिर हमारे सरकारी प्रतिष्ठान घाटे में नहीं चलेंगे। कार्यालयों में बाबुओं की मेजों पर फाइलों के ढेर नहीं लगे रहेंगे। जब भारत का कृषक खेतों में घोर परिश्रम करके, मजदूर कारखानों में जी–तोड़ मेहनत करके और उत्पादन बढ़ाकर, देश के वैज्ञानिक उपयोगी आविष्कार करके, भारत का अध्यापक–वर्ग बच्चों के कोमल हृदय और मस्तिष्क में सच्चरित्रता और मातृभूमि की भक्ति की भावना बद्धमूल करके, माता–पिता पूरे परिश्रम से बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास करने में अपनी शक्ति को खपायेंगे तब इस तीसरी देवी मातृभूमि की प्रतिष्ठा और पूजा होगी।

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा किये गये सम्मान की चित्रमय झलकियाँ

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल - श्री गंगाप्रसाद जी का उद्‌बोधन

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा महर्षि देव दयानन्द के संकल्प की पूर्णता हेतु संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की ऐतिहासिक पुण्य भूमि पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में विद्यमान पूज्य योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, महासम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी, विशिष्ट अतिथि स्वामी सुमेधानन्द जी 'सांसद', उत्तराखण्ड सरकार में कैबिनेट मंत्री श्री मदन कौशिक जी, स्वागताध्यक्ष माननीय विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी, कार्यक्रम के संयोजक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो0 विट्ठल राव जी, कोषाध्यक्ष पं. मायाप्रकाश जी त्यागी समस्त आयोजक मण्डल एवं देश-विदेश से पधारे विभिन्न गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्या महानुभाव! प्राध्यापकगण, आर्यजनों एवं प्रिय छात्र एवं छात्राओं। आज गुरुकुल कांगडी की इस पावन भूमि पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के सौजन्य से विश्व विख्यात योगगुरु पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज की गरिमामयी उपस्थिति, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व एवं पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में गुरुकुलीय परम्परा के संरक्षण एवं संपोषण हेतु आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में पधारकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

भारत के भविष्य के निर्माण का संकल्प अपने हृदय में संकल्पित करने वाले महान् आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के सार्थक शिष्य अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना कर वैदिक गौरव गाथा का उद्‌गान किया था। प्राच्य एवं अर्वाच्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन एवं उच्चस्तरीय अनुसंधान एवं प्रकाशन के केन्द्र के रुप में गुरुकुल का मुख्य स्थान रहा है। मानव निर्माण एवं विश्वकल्याण के केन्द्र रुप में गुरुकुल की स्थापना महर्षि दयानन्द के उद्‌घोष के अनुरुप स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा 4 मार्च 1902 को भगवती भागीरथी के पावन तट पर प्राचीन भारतीय आदर्शो एवं जीवन मूल्यों को साकार रुप प्रदान करने के लिए गुरुकुलीय परम्परा के पुनरावर्तन के रुप में हुई थी। इन महापुरुषों का यह दृढ़ विश्वास था कि वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार और उन्नयन से ही देश का निर्माण होगा, जब तक वेद में छिपे हुए रहस्यों को संसार के समक्ष नहीं रखा जायेगा, तब तक अविद्या अन्धकार दूर नहीं होगा। वेद भाष्यकार एवं आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तृतीय नियम में स्पष्ट घोषणा की- **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।** अपने आचार्य के प्रेरणा-स्रोत इन हृदया-पल्लवित विचारों को जानकर गुरुकुल के स्नातकों ने वेद विषयक अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थों का निर्माण किया है। आचार्य अभयदेव विरचित वैदिक विनय एवं आचार्य रामनाथ वेदालंकार प्रणीत वेदमञ्जरी एवं सामवेद भाष्य आदि अनुपम ग्रन्थों को पढ़कर सभी सुपथगामी बनकर आनन्द विभोर हो जाते है।

शतपथ ब्राह्मण के ''मातृमानपितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद'' के अनुसार बालक के तीन गुरु माता, पिता और आचार्य होते हैं। माता-पिता और आचार्य के प्रति बालक की श्रद्धा ही उनके जीवन में आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि का संचार करती है।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

श्रद्धापूर्वक बालक आचार्य के चरणों में बैठकर ज्ञान प्राप्ति करता है, तो वह श्रद्धा की अग्नि में स्वयं को समिधा बनाकर उस ज्ञानाग्नि में तपकर कुन्दन बन जाता है, क्योंकि -

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्ध्नि वचसा वेदयामसि॥

इस वेदवाक्य के अनुसार श्रद्धा सत्य में स्थित है, और हृदय में स्थित सच्ची श्रद्धा ही ईश्वर मिलन अर्थात् मोक्ष के मार्ग को प्रशस्त किया करती है।

जिस दयालु गुरुवर महर्षि दयानन्द के सम्मुख जिज्ञासु मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के तर्कयुक्त प्रश्न, सत्यास्थित श्रद्धा की वेदी पर आकर मौन हो गये। श्रद्धा की सत्यता ने हृदयाकाश में वह अग्नि प्रज्ज्वलित की, कि भयंकर जंगल में भगवती भागीरथी के तट पर हिमालय पर्वतमाला की उपत्यका में भी ईश्वरविश्वासी कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द ने वेद मन्त्रोंच्चार की पवित्र ध्वनि को सत्कृत कर दिया। यह श्रद्धा का ही प्रतिफल था कि उन्होंने दिल्ली के ऐतिहासिक चांदनी चौक में अग्रेजों की संगीनों के सामने सीना तानकर कहा था कि **हिम्मत हो तो चला दो गोली संन्यासी का सीना खुला हुआ है।** इस श्रद्धावनत वाक्य से वे बलिदान की वेदी पर आहूत होकर अमर हुतात्मा बनकर मृत्युञ्जय बन गये। वास्तव में श्रद्धा ही आत्मसंयमिता एवं विश्वास की वह अग्नि है जो मानवीयता को सबलता एवं सक्षमता प्रदान कर, भय और द्वन्द्वों को समाप्त कर देती है।

मनुष्य हृदय में स्थित श्रद्धा को प्रेरणा बनाकर जब शुभ संकल्प को धारण कर लेता है, तो परमात्मा भी उस पवित्र संकल्प को पूर्ण करता है।

गुरुकुल त्याग, तपस्या और साधना की तपस्थली हैं, इस ज्ञान की अग्नि में स्वजीवन को तपाकर अनेकों प्रतिभावान स्नातकों ने गुरुकुल एवं भारत माता की गौरवगाथा को दिग्-दिगन्त तथा विद्वत्मण्डली के मध्य में गौरवान्वित किया है। इन प्रतिभाशाली यशस्वी स्नातकों में पं. बुद्धदेव जी विद्यामार्तण्ड, पं. हरिश्चन्द्र, पं. इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, (दोनो क्रमशः स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र) आचार्य अभयदेव जी, पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, डॉ. रामनाथ जी वेदालंकार, आचार्य रामप्रसाद जी वेदालंकार, डॉ. जयदेव जी वेदालंकार, पं. सत्यकाम जी विद्यालंकार, पं. जनमेजय जी विद्यालंकार तथा पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पं. प्रकाशवीर शास्त्री आदि वाग्मि विद्वान् प्रमुख है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी गुरुकुल के स्नातकों का अग्रणी योगदान रहा है। हैदाराबाद सत्याग्रह, पंजाब प्रान्त के टिहरी सत्याग्रह और गौरक्षा सत्याग्रह में गुरुकुल के शिक्षकों एवं ब्रह्मचारियों की अग्रणी भूमिका रही हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में चलाये जा रहे आन्दोलन में गुरुकुल के शिक्षकों एवं ब्रह्मचारियों द्वारा बांध का कार्य करके प्राप्त हुए धन को दक्षिण अफ्रीका महात्मा जी के पास भेजना गुरुकुल की राष्ट्रभक्ति के सार्वभौमिक स्वरुप का प्राञ्जल उदाहरण है।

वेद, साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद, योग, पत्रकारिता, राजनीति, समाजसेवा एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के रक्षण एवं संवर्द्धन आदि में गुरुकुल के स्नातकों की पहचान ने राष्ट्र को वेद के मार्ग पर चलकर वैदिक ध्वजा को सम्पूर्ण विश्व में फहराने का अप्रतिम संदेश दिया है।

आज जहाँ समस्त विश्व विज्ञान के चर्मोत्कर्ष पर है। वहां उद्योगों, शिल्पों, संचार-साधनों, भवनों, राजमार्गो और **''टका धर्मः टका कर्मः टका हि परमं पदम्''** की संकल्पना तो साकार हो रही है, परन्तु मानवता निर्जीव सी प्रतीत होती है। शिक्षा के नित नवीन संसाधन दिखाई देते है। विद्यालयों में शिक्षकों और छात्रों की संख्या दिनों दिन बढ़ रही है, परन्तु निराशा, हताशा, कुण्ठा और अवसाद ने जैसे युवा पीढ़ी को पथभ्रष्ट सा कर दिया है। धनाभाव एवं साधनाभाव में जीवनयापन करने वाला वर्ग-अपराध, हिंसा, द्वेष, नशाखोरी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार में संलिप्त होकर मार्ग से भटक रहा है प्रतिदिन मर्मान्तक एवं दुःखान्तक दृश्य और समाचार देखने और सुनने को मिलते हैं भौतिकवाद की आंधी ने मानव को संस्कार, सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान एवं बौद्धिक मान्यताओं और मूल परम्पराओं से पृथक कर दिया है। आज सम्पूर्ण विश्व अग्नि के मुख में जाता दिखता है, चारों और भय, आशंका और अशान्ति का वातावरण व्याप्त है।

चारों वेद, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मण, वेदांग, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष विषयक ग्रन्थ तथा सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, मीमांसा, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार-विधि, सत्यार्थ प्रकाश, पंचतन्त्र, नीतिशतक एवं संस्कृत की रससिक्त काव्य रचनाएँ और उनका वैभव हमारी ही नहीं अपितु समस्त विश्व वेद ज्ञान की अक्ष्य निधि है। इसीलिए युगप्रवर्तक, स्वतन्त्रता के सूत्रधार महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र को वेदों की ओर लौटने का अमर संदेश दिया है, वेदों में सार्वकालिक और सार्वभौमिक सत्य निहित है। वैदिक ज्ञान और विज्ञान में समस्त समस्याओं का समाधान सन्निहित है। वेदों का नियमित स्वाध्याय एवं आचरण ही मनुष्यमात्र के कष्टों का निवारण करने मे सक्षम है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्राचीन काल से मनुष्य को मानवता के साथ-साथ सर्वागींण एवं चारित्रिक विकास की ओर ले जाने वाली है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में गुरुकुलों की उपयोगिता पर किया गया चिन्तन वर्तमानिक समस्याओं का समाधान है। देश-विदेश में संचालित गुरुकुलों का एक स्थान पर एकत्रित होकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने पर गम्भीर चिन्तन करके ठोस योजना तैयार करना निःसंदेह ऐतिहासिक कार्य है। मेरी जानकारी में यह पहला महासम्मेलन है जिसमें समस्त गुरुकुल एकत्र होकर चिन्तन-मनन कर रहे हैं।

मैं सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने इस आवश्यक विषय पर मन्थन कराकर समस्त विश्व को नूतन चिन्तन का सुअवसर प्रदान किया है।

इस महासम्मेलन के आयोजन की सफलता की शुभकामनाओं के साथ मैं आप सभी को आश्वस्त करता हूं कि गुरुकुलीय परम्परा के उन्नयन में यदि मैं कुछ योगदान कर पाया तो यह मेरा परम सौभाग्य होगा। पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के सान्निध्य में इस महासम्मेलन का प्रभाव और भी अधिक बढ़ गया है तथा इसमें लिए जाने वाले निर्णय और भी अधिक प्रभावी होंगे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

अन्त में स्वामी आर्यवेश जी, प्रो0 विट्ठल राव जी, पं. मायाप्रकाश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी स्वामी यतीश्वरानन्द जी आदि को हृदय से नमन करता हूं तथा सभी पदाधिकारियों एवं आप सब का हृदय से धन्यवाद करता हूं।

यह गुरुकुल महासम्मेलन पूर्णतः सफल हो तथा गुरुकुलीय शिक्षा में दक्ष छात्र विश्व को नवोन्मेष प्रगति प्रदान करें, ऐसी ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत॥

ब्रह्म मुहूर्त में उठने की परम्परा क्यों?

रात्रि के अंतिम प्रहर को ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने इस मुहूर्त का विशेष महत्व बताया है। उनके अनुसार यह समय निद्रा त्याग के लिए सर्वोत्तम है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने से सौंदर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। सूर्योदय से चार घड़ी (लगभग डेढ़ घंटे) पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में ही जग जाना चाहिए। इस समय सोना शास्त्र निषिद्ध है।

ब्रह्म का मतलब परम तत्त्व या परमात्मा। मुहूर्त यानी अनुकूल समय। रात्रि का अंतिम प्रहर अर्थात् प्रातः 4 से 5. 30 बजे का समय ब्रह्म मुहूर्त कहा गया है।

''ब्रह्ममुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी।''

(ब्रह्ममुहूर्त की निद्रा पुण्य का नाश करने वाली होती है।)

सिख धर्म में इस समय के लिए बेहद सुन्दर नाम है – ''अमृत वेला,'' जिसके द्वारा इस समय का महत्त्व स्वयं ही साबित हो जाता है। ईश्वर भक्ति के लिए यह सर्वश्रेष्ठ समय है। इस समय उठने से मनुष्य को सौंदर्य, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की प्राप्ति होती है। उसका मन शांत और तन पवित्र होता है।

ब्रह्म मुहूर्त में उठना हमारे जीवन के लिए बहुत लाभकारी है। इससे हमारा शरीर स्वस्थ होता है और दिनभर स्फूर्ति बनी रहती है। स्वस्थ रहने और सफल होने का यह ऐसा फार्मूला है जिसमें खर्च कुछ नहीं होता। केवल आलस्य छोड़ने की जरूरत है।

पौराणिक महत्त्व – वाल्मीकि रामायण के मुताबिक माता सीता को ढूंढ़ते हुए श्री हनुमान ब्रह्ममुहूर्त में ही अशोक वाटिका पहुँचे। जहाँ उन्होंने वेद व यज्ञ के ज्ञाताओं के मंत्र उच्चारण की आवाज सुनी।

शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है –

वर्णं कीर्तिं मतिं लक्ष्मीं स्वास्थ्यमायुश्च विदन्ति।

ब्राह्मे मुहूर्ते संजाग्रच्छि वा पंकज यथा।।

अर्थात् – ब्रह्म मुहूर्त में उठने से व्यक्ति को सुंदरता, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु आदि की प्राप्ति होती है। ऐसा करने से शरीर कमल की तरह सुन्दर हो जाता है।

ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति :–

ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति का गहरा नाता है। इस समय में पशु–पक्षी जाग जाते हैं। उनका मधुर कलरव शुरू हो जाता है। कमल का फूल भी खिल उठता है। मुर्गे बाँग देने लगते हैं। एक तरह से प्रकृति भी ब्रह्म मुहूर्त में चैतन्य हो जाती है। यह प्रतीक है उठने, जागने का। प्रकृति हमें संदेश देती है ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लिए।

इसलिए मिलती है सफलता व समृद्धि :–

आयुर्वेद के अनुसार ब्रह्म मुहूर्त में उठकर टहलने से शरीर में संजीवनी शक्ति का संचार होता है। इसके अलावा यह समय अध्ययन के लिए भी सर्वोत्तम बताया गया है क्योंकि रात को आराम करने के बाद सुबह जब हम उठते हैं तो शरीर तथा मस्तिष्क में भी स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है।

ब्रह्म मुहूर्त के धार्मिक, पौराणिक व व्यावहारिक पहलुओं और लाभ को जानकर हर रोज इस शुभ घड़ी में जागना शुरू करें तो बेहतर नतीजे मिलेंगे।

ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाला व्यक्ति सफल, सुखी और समृद्ध होता है, क्यों? क्योंकि जल्दी उठने से दिनभर के कार्यों और योजनाओं को बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसलिए न केवल जीवन सफल होता है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने वाला हर व्यक्ति सुखी और समृद्ध हो सकता है। कारण वह जो काम करता है उसमें उसकी प्रगति होती है। विद्यार्थी परीक्षा में सफल रहता है। जॉब (नौकरी) करने वाले से बॉस खुश रहता है। बिजनेसमैन अच्छी कमाई कर सकता है। बीमार आदमी की आय तो प्रभावित होती ही है? उल्टे खर्च बढ़ने लगता है। सफलता उसके कदम चूमती है जो समय का सदुपयोग करे और स्वस्थ रहे। अतः स्वस्थ और सफल रहना है तो ब्रह्म मुहूर्त में उठें।

वेदों में भी ब्रह्म मुहूर्त में उठने का महत्त्व और उससे होने वाले लाभ का उल्लेख किया गया है।

प्रातारत्नं प्रातरिष्वा दधाति तं चिकित्वा प्रतिगृह्यनिधत्तो।

तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचेत सुवीरः।।

– ऋग्वेद 1/125/1

अर्थात् सुबह सूर्य उदय होने से पहले उठने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसीलिए बुद्धिमान लोग इस समय को व्यर्थ नहीं गंवाते। सुबह जल्दी उठने वाला व्यक्ति स्वस्थ, सुखी, ताकतवाला और दीर्घायु होता है।

यद्य सूर उदितोऽनागा मित्रोऽर्यमा। सुवाति सविता भगः।। – सामवेद 35

अर्थात् व्यक्ति को सुबह सूर्योदय से पहले शौच व स्नान कर लेना चाहिए। इसके बाद भगवान की पूजा–अर्चना करना चाहिए। इस समय की शुद्ध व निर्मल हवा से स्वास्थ्य और संपत्ति की वृद्धि होती है।

उद्यन्त्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे। अर्थववेद–7/16/2

अर्थात् सूरज उगने के बाद भी जो नहीं उठते या जागते उनका तेज खत्म हो जाता है।

व्यावहारिक महत्त्व : व्यावहारिक रूप से अच्छी सेहत, ताजगी और ऊर्जा पाने के लिए ब्रह्म मुहूर्त बेहतर समय है। क्योंकि रात की नींद के बाद पिछले दिन की शारीरिक और मानसिक थकान उतर जाने पर दिमाग शांत और स्थिर रहता है। वातावरण और हवा भी स्वच्छ होती है। ऐसे में देव उपासना, ध्यान, योग, पूजा, तन, मन और बुद्धि को पुष्ट करते हैं।

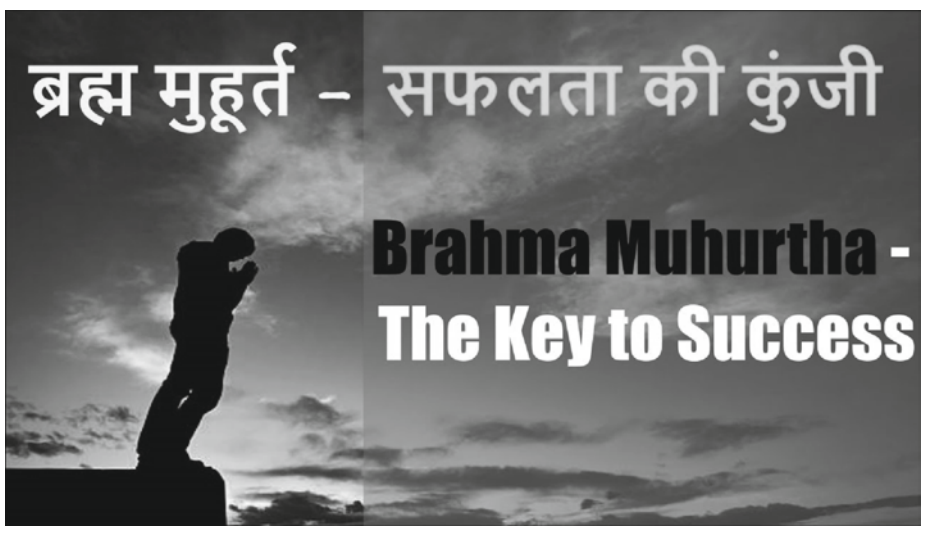

जैविक घड़ी पर आधारित शरीर की दिनचर्या :–

प्रातः 3 से 5 – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से फेफड़ों में होती है। थोड़ा गुनगुना पानी पीकर खुली हवा में घूमना एवं प्राणायाम करना। इस समय दीर्घ श्वसन करने से फेफड़ों की कार्यक्षमता खूब विकसित होती है। उन्हें शुद्ध वायु (ऑक्सीजन) और ऋण आयन विपुल मात्रा में मिलने से शरीर स्वस्थ व स्फूर्तिमान होता है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाले लोग बुद्धिमान व उत्साही होते हैं, और सोते रहने वालों का जीवन निस्तेज हो जाता है।

प्रातः 5 से 7 – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से आँत में होती है। प्रातः जागरण से लेकर सुबह 7 बजे के बीच मल त्याग एवं स्नान कर लेना चाहिए। सुबह 7 के बाद जो मल–त्याग करते हैं उनकी आँतें मल में से त्याज्य द्रवांश का शोषण कर मल को सुखा देती हैं। इससे कब्ज तथा कई अन्य रोग उत्पन्न होते हैं।

प्रातः 7 से 9 – इस समय जीवन शक्ति विशेष रूप से आमाशय में होती हैं। यह समय भोजन के लिए उपर्युक्त है। इस समय पाचक रस अधिक बनते हैं। भोजन के बीच–बीच में गुनगुना पानी (अनुकूलता अनुसार) घूँट–घूँट पियें।

प्रातः 11 से 1 – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से हृदय में होती है।

दोपहर 12 बजे के आस–पास मध्यान्ह–संन्ध्या (आराम) करने का हमारी संस्कृति में विधान है। इसीलिए भोजन वर्जित है। इस समय तरल पदार्थ ले सकते हैं। जैसे मट्ठा पी सकते हैं। दही खा सकते हैं।

दोपहर 1 से 3 बजे – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से छोटी आँत में होती है। इसका कार्य आहार से मिले पोषक तत्त्वों का अवशोषण व व्यर्थ पदार्थों को बड़ी आँत की ओर धकेलना है। भोजन के बाद प्यास अनुरूप पानी पीना चाहिए। इस समय भोजन करने अथवा सोने से पोषक आहार रस के शोषण में अवरोध उत्पन्न होता है व शरीर रोगी तथा दुर्बल हो जाता है।

दोपहर 3 से 5 बजे – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से मूत्राशय में होती है। 2–4 घंटे पहले पिये पानी से इस समय मूत्र त्याग की प्रवृत्ति होती है।

शाम 5 से 7 बजे – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से गुर्दे में होती है। इस समय हल्का भोजन कर लेना चाहिए। शाम को सूर्यास्त से 40 मिनट पहले भोजन कर लेना उत्तम रहेगा। सूर्यास्त के 10 मिनट पहले से 10 मिनट बाद तक (संन्ध्याकाल) भोजन न करें। शाम को भोजन के तीन घंटे बाद दूध पी सकते हैं। देर रात को किया गया भोजन सुस्ती लाता है यह अनुभवगम्य है।

रात्रि 7 से 9 बजे – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से मस्तिष्क में होती है। इस समय मस्तिष्क विशेष रूप से सक्रिय रहता है। अतः प्रातःकाल के अलावा इस काल में पढ़ा हुआ पाठ जल्दी याद रह जाता है। आधुनिक अन्वेषण से भी इसकी पुष्टि हुई है।

रात्रि 9 से 11 बजे – इस समय जीवन शक्ति विशेष रूप से रीढ़ की हड्डी में स्थित मेरुरज्जु में होती है। इस समय पीठ के बल या बायीं करवट लेकर विश्राम करने से मेरुरज्जु को प्राप्त शक्ति को ग्रहण करने में मदद मिलती है। इस समय की नींद सर्वाधिक विश्रांति प्रदान करती है। इस समय का जागरण शरीर व बुद्धि को थका देता है। यदि इस समय भोजन किया जाये तो वह सुबह तक जठर में पड़ा रहता है, पचता नहीं और उसके सड़ने से हानिकारक द्रव्य पैदा होते हैं जो अम्ल (एसिड) के साथ आँतों में जाने से रोग उत्पन्न करते हैं। इसलिए इस समय भोजन करना खतरनाक है।

रात्रि 11 से 1 बजे – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से पित्ताशय में होती है। इस समय का जागरण पित्त विकार, अनिद्रा, नेत्ररोग उत्पन्न करता है व बुढ़ावा जल्दी लाता है। इस समय नई कोशिकाएँ बनती हैं।

रात्रि 1 से 3 बजे – इस समय जीवनी शक्ति विशेष रूप से लीवर में होती है। अन्न का सूक्ष्म पाचन करना यह यकृत का कार्य है। इस समय का जागरण यकृत (लीवर) व पाचन तंत्र को बिगाड़ देता है। इस समय यदि जागते रहे तो शरीर नींद के वशीभूत होने लगता है, दृष्टि मंद होती है और शरीर की प्रतिक्रियाएँ मंद होती है। अतः इस समय सड़क दुर्घटनाएँ अधिक होती हैं।

नोट – ऋषियों व आयुर्वेदाचार्यों ने बिना भूख लगे भोजन करना वर्जित बताया है। अतः प्रातः एवं शाम को भोजन की मात्रा ऐसी रखें, जिससे ऊपर बताये भोजन के समय में खुलकर भूख लगे। जमीन पर कुछ बिछाकर सुखासन में बैठकर ही भोजन करें। इस आसन में मूलाधार चक्र सक्रिय होने से जठराग्नि प्रदीप्त रहती है। कुर्सी पर बैठकर भोजन करने में पाचनशक्ति कमजोर तथा खड़े होकर भोजन करने से तेा बिल्कुल समाप्त हो जाती है। इसलिए 'बुफे डिनर' से बचना चाहिए।

पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का लाभ लेने हेतु सिर पूर्व या दक्षिण दिशा में करके ही सोयें, अन्यथा अनिद्रा जैसी तकलीफें होती हैं।

शरीर की जैविक घड़ी को ठीक ढंग से चलाने हेतु रात्रि को बत्ती बन्द करके सोयें। इस संदर्भ में हुए शोध चौंकाने वाले हैं। देर रात तक कार्य या अध्ययन करने से और बत्ती चालू रख के सोने से जैविक घड़ी निष्क्रिय होकर भयंकर स्वास्थ्य सम्बन्धी हानियाँ होती हैं। अंधेरे में सोने से यह जैविक घड़ी ठीक ढंग से चलती है।

आजकल पाये जाने वाले अधिकांश रोगों का कारण अस्त–व्यस्त दिनचर्या व विपरीत आहार ही है। हम अपनी दिनचर्या शरीर की जैविक घड़ी के अनुरूप बनाये रखें तो शरीर के विभिन्न अंगों की सक्रियता का हमें अनायास ही लाभ मिलेगा। इस प्रकार थोड़ी–सी सजगता हमें स्वस्थ जीवन की प्राप्ति करा देगी। सब सुखी और निरोगी हों।

भारतीय संस्कृतिरक्षणे गुरुकुलानां योगदानम्

- डॉ. मंजूनाथ एस.जी.

परिवर्तनशीलेऽस्मिन् वैज्ञानिक युगे देशस्याधुनिक शिक्षणसमस्यानां समाधानार्थं प्राचीनशिक्षणव्यवस्थायाः ज्ञानमप्यावश्यकम्। प्राचीनशिक्षणेन कथमस्माकमाचारविचाराः संस्कृतिसंस्कारांच संरक्षिता आसन्निति विचारः। अत्रादौ का नाम शिक्षा? तेन किं प्रयोजनम्? किमर्थं गुरुमुखेन शिक्षणमपेक्षते? गुरुकुलशिक्षणं कथमासीत्? कोऽयं संस्कारः? अथवा का नाम संस्कृतिः? गुरुकुलशिक्षणेन कथमस्माकं संस्काराः संरक्षिताः? इति क्रमशः विचार्यते।

'विद्ययाऽमृतमश्नुते' इति परमपुरुषार्थ मोक्षसाधनं विद्यायाः मुख्यमुद्देश्यमासीत्। अत एवोच्यते 'सा विद्या या विमुक्तये' इति। तस्मादसकृदुपदिश्यते 'द्वे विद्ये परा अपरा च। तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषामिति। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते। इति विद्या तु शिक्षणेन सम्पाद्यते। अतः विद्या साध्या, शिक्षा साधनंच भवति। 'शिक्ष् विद्योपादाने' इति धातुना निष्पन्नस्य शिक्षाशबदस्य विद्यार्जनम् इत्यर्थः। इत्थं मोक्षसम्पादनं विद्यायाः मुख्यमुद्देश्यमासीदिति स्पष्टम्। किंच, पवित्रभावना, चरित्रनिर्माणम्, व्यक्तित्वविकासः, सामाजिकभावना, कौशल्यसम्पादनम्, संस्कृतिसंस्काराणां संरक्षणम्, श्री भगवानदासआदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः, हरिद्वारम् तेषां प्रसारः, शारीरिक मानसिक बौद्धिक आध्यात्मिकशक्तीनां विकासंच प्राचीनशिक्षायाः उद्देश्यमासीत्।

समर्थः गुरुरेव गूढार्थप्रकाशनपुरस्सरं तत्त्वज्ञानं प्रदातुं समर्थः। अतः गुरुमुखादेवाध्ययनं करणीयमित्युच्यते। यथा – 'तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।

पुस्तकप्रत्ययाधीतं नाधीतं गुरुसन्निधौ।
भ्राजते न सभामध्ये जारगर्भा इव स्त्रियः।।
न विना ज्ञानविज्ञाने मोक्षस्याधिगमो भवेत्।
न बिना गुरुसम्बन्धं ज्ञानस्याधिगमः स्मृतः।।
तस्माद् गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम्।।

इत्यादिश्रुतिस्मृतयः। तस्मान्माणवका अध्ययनार्थं गुरुकुलं गत्वा तत्रैवोषित्वा अध्ययनं कुर्वन्ति स्म।

यथेदानीं त्रिमुखीशिक्षणं बहुमुखी शिक्षणमस्ति, तथादौ नासीत्। तदा गुरुः शिष्य इति द्विमुखीशिक्षणमासीत्। यथा – 'आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवास्युत्तररूपम्। विद्या सन्धिः। प्रवचनं सन्धानम्। इत्यधिविद्यम्। इति। एवं प्रवचनमाध्यमेन मौखिकविधिना, व्याख्यानविधिना, शास्त्रार्थविधिना, स्वाध्यायविधिना चाध्ययनम् आसीत्। अत्र पठितविषयस्य धारणम् आवश्यकम् आसीत्। तस्माच्छात्राणां धारणाशक्तिः संवर्धिता आसीत्। **क्रमशः**

श्रीराम को मंदिर में नही अपितु मन में बसाने की आवश्यकता : दीक्षेन्द्र आर्य

मितेश अग्रवाल, शिवगंज
रणवीर राजस्थान

मिशन आर्यव्रत के निदेशक व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य ने आर्य समाज शिवगंज में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि श्रीराम को मंदिर में बसाने की नही बल्कि मन में बसाने की आवश्यकता है। आर्य ने कहा कि आजकल राजनीतिक पार्टियां श्रीराम को मंदिर में बसाने के लिए ताकत लगा रही है। इसके लिए समाज में आपसी तनाव भी बनता है, आज आवश्यकता है श्रीराम को मन में बसाने की। उनकी मर्यादाओं व जीवनशैली को यदि हम अपने जीवन में उतारते है तो एक सुंदर व स्वच्छ समाज की स्थापना की जा सकती है। यदि आज समाज में श्रीराम की मान्यताओं को लागु किया गया होता तो वृद्धाश्रम बनाने की जरुरत नहीं पडती। माता-पिता की सेवा, भाई-भाई में प्रेम, अन्याय के विरूद्ध संघर्ष, दलित व गरीबों को गले लगाना ये मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के जीवन से सीखने को मिलता है। इन्हीं मान्यताओं को आर्य समाज मानता है व प्रचारित भी करता है। दीक्षेन्द्र आर्य सहित कई गणमान्य महानुभावों ने हरदेव आर्य के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित यज्ञ के पश्चात् शुभकामनाएं दी।

गुरूकुल महासम्मेलन में सहयोग के लिए जताया आभार

6, 7 व 8 जुलाई को गुरूकुल कांगडी हरिद्वार में विश्व इतिहास में पहली बार आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरूकुल महासम्मेलन के सफल आयोजन में आर्यवीर दल शिवगंज व आर्य समाज शिवगंज के कार्यकर्ताओं का दीक्षेन्द्र आर्य ने आभार जताया और कहा कि आपका आर्थिक सहयोग व कार्यकर्ताओं की उपस्थिति ने महासम्मेलन को सफल बना दिया।

संगठन को मजबूत करने के लिए बैठकों का आयोजन

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री हरदेव आर्य ने बताया कि आर्य समाज संगठन को मजबूत करने के लिए दीक्षेन्द्र आर्य ने स्थानीय कार्यकर्ताओं की बैठक के अतिरिक्त आर्य समाज सुमेरपुर, चेतन विद्या मंदिर सुमेरपुर, कानाकोलर में भी आर्य कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। आगामी दिनों में युवाओं के आध्यात्मिक व योग शिविरों का आयोजन के लिए काम्बेश्वर जी स्थित धर्मशालाओं का अवलोकन भी किया। उसके अतिरिक्त प्रसिद्ध पर्यटक स्थल जवाई बांध को देखने भी पहुंचे। इस अवसर पर पंचायत समिति प्रधान जीवाराम आर्य से मुलाकात कर समाज में तेजी से बढ रहे नशे से बचाने व महिलाओं के प्रति सम्मान को बढाने के लिए विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर आर्य समाज प्रधान मदन आर्य, जितेन्द्र सिंह, पुरूषोत्तम सुथार, अरूण आर्य, जीवाराम आर्य, फूलाराम सुथार, केशवदेव शर्मा, गेनाराम प्रजापत, सुरेश आर्य, सुरेश दत्ता, गुणवन्त ओमप्रकाश आर्य, कपूरचंद सुथार, प्रदीप गहलोत, हरदेव आर्य वरिष्ठ, गोविन्दराम व नवरत्न आर्य मौजूद रहे।

The Ideal Life Style for Senior Citizens

The most important aspect of life to be taken care of by every senior citizen's wellness. Very often we come across many senior citizens who are 100% vegetarians, saying, "We are suffering from diabetes or high blood pressure or heart trouble, despite the fact that we are pure vagetarians since birth. Why is it so?" This is a real life situation and I propose to answer this question with a guarantee that by following a self-disciplined life style management as suggested below, a senior citizen would be able to enjoy wellness, i.e., very good health with no diabetes, high blood pressure or heart trouble etc. A senior citizen must follow a self-disciplined life style management to enable him to enjoy real wellness, as per my suggestions based on my practical self-disciplined life style of nearly seven decades.

Regular Routine

It is absolutely necessary for a senior citizen to strictly follow a regular routine to the extent possible in the matter of getting up early in the morning before sunrise, remembering God, having regular daily routine and observing fixed timings for breakfast, lunch, dinner, rest and sleep as also for work and hobbies.

Exercise

An exercise, whether in the form of any game or sport or comfortable walk of at least 45 minutes in the morning is absolutely essential for every citizen to achieve all the four aspects of Health-Care, namely, (1) Circulation, (2) Assimilation, (3) Respiration, and (4) Elimination. This should be supplemented, wherever possible, with Yogasans and pranayams in fresh air, to the extent possible. A senior citizen should always set apart some. Fixed timings for meditation to enjoy better spiritual and mental health.

Wise Eating Habits

A senior citizen should become a strict vegetarian. However, it is not merely sufficient for a senior citizen to eat veg. food. What is important to be remembered in this connection is what to eat, when to eat, and how to eat. He should eat a well-balanced vegetarian diet, having sufficient quantity of carbohydrates, proteins, fats, vitamins and minerals, which would be ideal for wellness. He should remember that a vegetarian diet can be a very nutritious diet. He can get the required quantity of proteins, vitamins, carbohydrates, etc. from a combination of different items of veg. food. He should eat such veg. food which has about 80% alkaline content and 20% acidic content. For achieving this, fruits, green and leafy vegetables should occupy a prominent place in his veg. food programme. He should cut on fried food, salt and sugar. Vegetable soups, fat-free curd, butter, milk, salads and sprouts should occupy a prominent place in his diet. He should eat, as far as possible, at fixed timings and only when he is hungry. His breakfast should normally consist of fruits or fruit juices only. As far as possible, not more than two regular meals consisting of cereals, pulses and milk products at lunch and dinner should be taken. He should not take any snacks between two principal meals and if he feels hungry he may take fresh fruits or fresh juices. However, fresh fruits and juices should normally be taken about 25-30 minutes before any meal, to allow them to be digested properly and to be passed from stomach to intestines. He should never eat fruits with cereals at regular lunch or dinner and also never immediately after breakfast, lunch or dinner.

Food should be chewed very thoroughly. Water should not be taken at least within half an hour before and one hour after the meal to enable the digestive system to function properly. The eating-place should have an atmosphere of calmness and peace. He should avoid anger, excitement and tension at meal time.

He should drastically cut on tea and coffee or cola drinks. If possible, he should eliminate them altogether. He must say "No" to intoxicants, drugs, alcohol and smoking. The aerated or soft water drinks, tea and coffee can be substituted by tulsi and/or lemon drink, honey drink, sharbat, milk, lassi, etc.

Spiritual Positive Attitude

A senior citizen must remain always cheerful and smiling. A hearty laughter for a few minutes every day is a must for wellness. He should substitute forgiveness for revenge and eschew anger, hatred and ill feeling towards others. He should remember that anger is an acid which does more harm to the vessel in which it is stored rather than to the person on whom it is poured. Lust and passion must be kept under proper control.

Proper Rest & Relaxation

Mere good vegetarian diet and exercise alone will not ensure good health for a senior citizen. He must have adequate sleep for about 7 to 8 hours and also have proper rest and relaxation. Wherever possible, he should have about 10 minutes break after every two hours' table work or strenuous work or reading or hobby, by doing 'meditation' or 'deep breathing' or 'shavasan', etc.

If a senior citizen follows a self-disciplined life style, as suggested above, with a little practice and strong determination, it is possible for the senior citizen to have excellent health. If, however, a senior citizen still sometimes suffers from any ailment or disease, due to previous wrong life style, he is advised to refer to a proper medical person.

- R. N. Lakhotia

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, हरिद्वार में अपनी प्रतिभा दिखाते हुए ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियाँ

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।